दिल्ली अधीनस्थ सेवा चयन बोर्ड
DSSSB TGT & PGT
ROJGAR ANKIT
Part-B
SCHOLAR BATCH
संस्कृत
अलंकार
Part -2
LIVE
11-07-2024 05:00 PM

अथ अष्टम उल्लासः

(गुण-निरूपण)

काव्यप्रकाश के प्रथम उल्लास में "तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलङ्कृती पुनः क्वापि" यह काव्य का लक्षण दिया गया है। इस काव्यलक्षण में मम्मट ने शब्दार्थों का एक विशेषण 'सगुणौ' दिया है। इसी 'सगुणौ' विशेषण की स्पष्ट व्याख्या अष्टम उल्लास में करते हैं।

वामन ने जो गुण का लक्षण दिया है (काव्यशोभाया: कर्त्तारो धर्मा: गुणा:) वह अग्निपुराण के गुण लक्षण से साम्य रखता है।

एवं दोषानुक्त्वा गुणालङ्कारविवेकमाह –

(सू087) ये रसस्याङ्गिनो धर्मा: शौर्यादय इवात्मन: । - उत्कर्षहेतवस्ते स्युरचलस्थितयो गुणा: ॥66॥

अनुवाद - इस प्रकार सप्तम उल्लास में दोषों का निरूपण करने के बाद अब (अष्टम उल्लास में) गुण और अलङ्कार का भेद निरूपण करते हैं - -

अनुवाद - जो आत्मा के शौयादि धर्म के समान (काव्य में) अंगीभूत (प्रधान) रस के उत्कर्षक धर्म हैं और अचल स्थित (नियत रूप से रहने वाले) हैं, वे गुण कहे जाते हैं।

(सू० 88) उपकुर्वन्ति तं सन्तं येऽङ्गद्वारेण जातुचित् ।
हारादिवदलङ्कारास्तेऽनुप्रासोपमादयः ॥67 ॥

अनुवाद - जो (धर्म) शब्द और अर्थ रूप अङ्ग के द्वारा इसमें विद्यमान अंगी (रस) को कभी-कभी उपकृत करते हैं। वे अनुप्रास, उपमा आदि हार आदि के समान अलङ्कार कहे जाते हैं ॥67 ॥

अपसारय घनसारं कुरु हारं दूर एव किं कमलैः ।
अलमलमालिमृणालैरिति वदति दिवानिशं बाला ॥34॥

इत्यादौ वाचकमुखेन ।

अनुवाद - (कोई विरहिणी नायिका सखी से कहती है) हे सखि ! कपूर को हटा लो, हार को भी दूर कर दो, कमलों से क्या लाभ? कमलनाल को भी रहने दो, इस प्रकार वह बाला रातों-दिन बोलती रहती है ॥344॥

(2) अनुप्रास अलंकार

(सू0104) वर्णसाम्यमनुप्रासः ।

स्वरवैसादृश्येऽपि व्यञ्जनसदृशत्वं वर्णसाम्यम्। रसाद्यनुगतः प्रकृष्टो न्यासोऽनुप्रासः ।

अनुवाद - वर्णों की समानता अनुप्रास अलङ्कार है। स्वरों की विसदृशता (असमानता) होने पर भी व्यञ्जनों की समानता ही वर्णसाम्य (वर्णों की समानता) है। रसादि के अनुकूल वर्णों का प्रकृष्ट न्यास (सन्निवेश) अनुप्रास है।

(सू० 105) छेकवृत्तिगतो द्विधा।

अनुवाद (सू0105) छेकगत और वृत्तिगत (वह) दो प्रकार का होता है।

छेका विदग्धाः, वृत्तिर्नियतवर्णगतो रसविषयो व्यापारः। गत इति छेकानुप्रासो वृत्त्यनुप्रासश्च।

अनुवाद (वृत्ति) छेक शब्द अर्थ विदग्ध (चतुर व्यक्ति) है और वृत्ति नियत वर्णों में रहने वाला रस विषयक व्यापार है। 'गत' इससे छेकानुप्रास और वृत्त्यनुप्रास (अभिप्रेत) है।

किं तयोः स्वरूपमित्याह –

(सू० 106) सोऽनेकस्य सकृत्पूर्वः

अनेकस्य अर्थात् व्यञ्जनस्य सकृदेकवारं सादृश्यं छेकानुप्रासः।

उदाहरणम् -

अनुवाद अनेक (वर्णों) का एक बार सादृश्य प्रथम अर्थात् छेकानुप्रास है अर्थात् अनेक व्यञ्जनों का सकृत् एक बार सादृश्य छेकानुप्रास है।

जैसे -

ततोऽरुणपरिस्पन्दमन्दीकृतवपुः शशी ।
दध्रे कामपरिक्षामकामिनीगण्डपाण्डुताम् ॥35511

अनुवाद - इसके बाद अरुण (सूर्य-सारथि) के परिस्पन्द (संचरण, गतिशील होने) से मन्दकान्ति (मलिन स्वरूप) वाले चन्द्रमा ने किसी काम से परिक्षीण (रति-खिन्न) कामिनी के कपोलों की पाण्डुता धारण कर ली 1135511

(सू० 107) एकस्याप्यसकृत्परः ॥79॥

एकस्य अपिशब्दादनेकस्य व्यञ्जनस्य द्विर्बहुकृत्वो वा सादृश्यं वृत्त्यनुप्रासः । तत्र

अनुवाद - एक अथवा अनेक (वर्णों, व्यञ्जनों) की अनेक बार सादृश्य (आवृत्ति) दूसरा अर्थात् वृत्त्यनुप्रास है। एक वर्ण का और 'अपि' शब्द के अनेक व्यञ्जनों का दो बार अथवा अनेक बार सादृश्य वृत्त्यनुप्रास कहलाता है।

(सू० 108) माधुर्यव्यञ्जकैर्वर्णैरुपनागरिकोच्यते।

अनुवाद - माधुर्य व्यञ्जक वर्णों से युक्त वृत्ति उपनागरिका कही जाती है।

(सू० 109) ओजः प्रकाशकैस्तैस्तु परुषा।

अनुवाद-ओज के प्रकाशक वर्णों से युक्त परुषा वृत्ति कहलाती है। उभयत्रापि प्रागुदाहृतम् ('अनङ्गरङ्ग" इत्यादि, 'मूर्जामुद्धृत्त' इत्यादि च) अनुवाद (वृत्ति) - दोनों का उदाहरण पहिले दिया जा चुका है।

अर्थात् अष्टम उल्लास में उपनागरिका वृत्ति का उदाहरण 'अनङ्गरङ्गप्रतिमम्' इत्यादि (उदाहरण सं० 349) तथा परुषावृत्ति का उदाहरण 'मूर्नामुद्धृत्त' इत्यादि (30सं0350) में दिया जा चुका है।

(सू०112) शाब्दस्तु लाटानुप्रासो भेदे तात्पर्यमात्रतः ॥81 ॥

अनुवाद - तात्पर्यमात्र से भेद होने पर शब्दानुप्रास लाटानुप्रास कहलाता है ॥81॥

शब्दगतोऽनुप्रासः शब्दार्थयोरभेदेऽप्यन्वयमात्रभेदात् ।

लाटजनवल्लभत्वाच्च लाटानुप्रासः। एष पदानुप्रास इत्यन्ये ।

अनुवाद - (वृत्ति) यह शब्दगत अनुप्रास (शब्दानुप्रास) शब्द और अर्थ का अभेद होने पर भी अन्वय (तात्पर्य) मात्र के भेद होने से तथा लाट देश के लोगों का प्रिय होने के कारण लाटानुप्रास कहलाता है। कुछ आचार्य इसे पदानुप्रास कहते हैं।

(3) यमक अलंकार

(सू० 116) अर्थे सत्यर्थभिन्नानां वर्णानां सा पुनः श्रुतिः। यमकम्

अनुवाद - अर्थ होने पर भिन्न-भिन्न अर्थ वाले वर्णों की पूर्वक्रम के पुनः श्रुति (पुनरावृत्ति) यमक अलङ्कार कहलाता है।

'समरसमरसोऽयम्' (यह समर-समरस है अर्थात् युद्ध में एकरस है) इत्यादि में एक (वर्ण समूह समर) के सार्थक होने पर और दूसरे (वर्णसमूह समरस में 'समर' के) के अनर्थक होने से 'भिन्नार्थानाम्' (भिन्न अर्थ वाले वर्णसमूह का) यह कहना युक्त (ठीक) नहीं है। इसलिए यमक के लक्षण में 'अर्थे सति' (अर्थ के होने पर) यह कहा गया है। 'सा' (उसी रूप में आवृत्ति) उससे 'सरो रसः' इससे विलक्षण रूप से अर्थात् उसी क्रम से स्थित (वर्णों की आवृत्ति होनी चाहिए।)

सन्नारीभरणोमायमाराध्य विधुशेखरम्।
सन्नारीभरणोऽमायस्ततस्त्वं पृथिवीं जय ॥360॥

अनुवाद - सती (पतिव्रता) नारियों का भरण-पोषण करने वाली (अथवा पतिन्त्रता स्त्रियों के आभरण-आभूषण रूप = सन्नारीभरण) उमा (पार्वती) को प्राप्त करने वाले (सन्नारीभरणा या उमा तां याति अयते (प्राप्नोति) वा इति सन्नारीभरण उमाय: तम्) विधुशेखर शिव की आराधना करके सत्रारीभरण (सत्रा: मृता अरीणां शत्रूणाम् इभा गजा यत्र तादृशो रणो युद्धं यस्य स: सन्त्रारीभरण:)

अर्थात् शत्रुओं के हाथियों के विनाशक युद्ध करने वाले, कपट-रहित (अमायः न माया कपटः अमायः कपट-रहितः) आप पृथिवी का विजय प्राप्त करें ।।360।।

विनायमेनो नयताऽसुखादिना विना यमेनोनयता सुखादिना।

(4) श्लेष अलंकार

(सू० 118) वाच्यभेदेन भिन्ना यद् युगपद् भाषणस्पृशः।
श्लिष्यन्ति शब्दाः श्लेषोऽसावक्षरादिभिरष्टधा ॥84॥

अर्थभेदेन शब्दभेदः इति दर्शने 'काव्यमार्गे स्वरो न गण्यते' इति च नये वाच्यभेदेन भिन्त्रा अपि शब्दा यद् युगपदुच्चारणेन श्लिष्यन्ति भिन्नं स्वरूपमपह्नुवते स श्लेषः। स च वर्ण-पद-लिंग-भाषा-प्रकृति- प्रत्यय-विभक्ति-वचनानां भेदादष्टधा। क्रमेणोदाहरणम् -

अनुवाद - अर्थ भेद होने से भिन्न-भिन्न शब्द एक साथ उच्चारण-विषय के कारण जो एक रूप (श्लिष्ट) प्रतीत होते हैं, वह श्लेष अलङ्कार है और वह श्लेष अक्षर आदि के भेद से आठ प्रकार का होता है ।। 84 ।।

अनुवाद (वृत्ति)- 'अर्थ भेद से शब्द भेद होता है' अर्थात् यदि 'अर्थ भिन्न-भिन्न हैं तो शब्द भी भिन्न-भिन्न होंगे' इस सिद्धान्त के अनुसार और 'काव्यमार्ग में स्वर (उदात्तादि स्वर) का विचार नहीं किया जाता' इस नियम (न्याय) के अनुसार अर्थ के भेद से भिन्न होने पर भी शब्द जब एक साथ उच्चारण के द्वारा श्लिष्ट हो जाते हैं

अर्थात् अपने भिन्न स्वरूप को छिपा लेते हैं, तब वह श्लेष अलङ्कार कहलाता है और वह श्लेष अलङ्कार वर्ण, पद, लिङ्ग, भाषा, प्रकृति, प्रत्यय, विभक्ति और वचन के भेद से आठ प्रकार का होता है। क्रमशः उनका उदाहरण देते हैं-

(1) वर्णश्लेष

अलङ्कारः शङ्काकरनरकपालं परिजनो-
विशीर्णाङ्गी भृङ्गी वसु च वृष एको बहुवयाः।
अवस्थेयं स्थाणोरपि भवति सर्वामरगुरो
विंधौ वक्रे मूर्ध्नि स्थितवति वयं के पुनरमी ॥369॥

अनुवाद - भय को उत्पन्न करने वाला मानव का कपाल (खोपड़ी) जिस शिव का अलङ्कार है और उनका अनुचर गलित अंगों वाला भृङ्गी है, और (सम्पत्ति) धन एक बूढ़ा बैल है। समस्त देवताओं के पूज्य गुरु (श्रेष्ठ) शिवजी के (स्थाणोः) भी मस्तक पर वन (टेढ़े) चन्द्रमा (भाग्य) के स्थित होने पर जब यह दुरवस्था है तो हम तुच्छ मनुष्यों की गणना ही क्या है? ।।369।।

(2) पदश्लेष

पृथुकार्त्तस्वरपात्रं भूषितनिःशेषपरिजनं देव।
विलसत्करेणुगहनं सम्प्रति सममावयोः सदनम् ॥37011

अनुवाद - हे राजन् ! इस समय हम दोनों का (आपका और हमारा) घर पृथुकार्त्तस्वरपात्र (आपका-विशाल सुवर्ण के पात्रों से युक्त और हमारा घर बच्चों के करुण क्रन्दन का स्थान है),

भूषितनिःशेष परिजन (आपका अलंकृत समस्त परिजनों वाला और हमारा-भूमि पर लेटने वाले समस्त परिजनों वाला है), विलसत्करेणुगहन (आपका आवास सुन्दर हथिनियों से सुशोभित है और हमारा घर बिल में रहने वाले चूहों के बिल की मिट्टी से प भरा है) होने से एक समान है ।1370।।

अथ दशम उल्लासः

(अर्थालङ्कारविवेकः)

अलंकार काव्य का सबसे प्रमुख तत्त्व है। काव्य में शोभाकारक धर्म को अलंकार कहते हैं और वह शोभाकारक धर्म यदि अर्थ को अलंकृत करता है तो उसे अर्थालंकार कहते हैं।

अर्थालङ्कारानाह

(सू० 125) साधर्म्यमुपमा भेदे

उपमानोपमेययोरेव न तु कार्यकारणादिकयोः साधर्म्यं भवतीति तयोरेव समानेन धर्मेण सम्बन्ध उपमा।

अनुवाद - (उपमान और उपमेय का) भेद होने पर साधर्म्य (सादृश्य) का कथन उपमा (अलङ्कार) है। अनुवाद (वृत्ति) - उपमान और उपमेय का ही साधर्म्य होता है, कार्य और कारण आदि का साधर्म्य नहीं होता। का ही समान धर्म से सम्बन्ध होना उपमा है।

क्रमेणोदाहरणम् -

(1) वाक्यगा श्रौती उपमा का उदाहरण

स्वप्नेऽपि समरेषु त्वां विजयश्रीर्न मुञ्चति ।
प्रभावप्रभवं कान्तं स्वाधीनपतिका यथा ॥392॥

अनुवाद - हे राजन् ! स्वाधीनपतिका नायिका के समान विजयश्री युद्ध में प्रभुशक्तिसम्पन्न आपको स्वप्न में भी नहीं छोड़ती ॥392 ॥

(2) वाक्यगा आर्थी उपमा का उदाहरण

चकितहरिणलोललोचनायाः कुधि तरुणारुणतारहारिकान्ति ।
सरसिजमिदमाननं च तस्याः सममिति चेतसि सम्मदं विधत्ते । । ।3 9 3
। ।

अनुवाद - चकित हरिणी के समान चञ्चल नेत्र वाली उस नायिका का क्रोध में तरुण-अरुण (सूर्य-सारथि) के समान मनोहर कान्ति वाला यह मुख और यह कमल दोनों समान हो रहे हैं। इसलिए चित्त में आनन्द उत्पन्न करता है 1139311

(4) उत्प्रेक्षा अलंकार

(सू0137) सम्भावनमथोत्प्रेक्षा प्रकृतस्य समेन यत् समेन उपमानेन

उदाहरणम् -

अनुवाद - जहाँ पर प्रकृत (उपमेय) की सम (उपमान) के साथ सम्भावना की जाती है, वहाँ उत्प्रेक्षा अलंकार होता है।

(यहाँ पर सूत्र में) समेन का अर्थ उपमान के साथ है।

लिम्पतीव तमोऽङ्गानि वर्षतीवाञ्जनं नभः।

असत्पुरुषसेवेव दृष्टिर्विफलतां गता ॥418॥

अनुवाद - मानो अन्धकार अङ्गों में लिप्त हो रहा है (लेप लगा रहा है) और आकाश काजल की वर्षा कर रहा है तथा दुष्ट-पुरुष की सेवा के समान आँखें विफल सी हो गई हैं ॥418॥

(5) रूपक अलंकार

(सू0 139) तद्रूपकमभेदो य उपमानोपमेययोः। अतिसाम्यादनपह्नुतभेदयोरभेदः

अनुवाद - उपमान और उपमेय का जो अभेद (अभेदारोप) है, उसे रूपक अलङ्कार कहते हैं।

अत्यन्त साम्य के कारण प्रसिद्ध वैधर्म्य वाचक उपमान और उपमेय में (अभेदारोप रूपक अलंकार है)।

यथा-ज्योत्स्नाभस्मच्छुरणधवला बिभ्रती तारकास्थी -
न्यन्तर्द्धनिव्यसनरसिका रात्रिकापालिकीयम् ।
द्वीपाद् द्वीपं भ्रमति दधती चन्द्रमुद्राकपाले
न्यस्तं सिद्धाञ्जनपरिमलं लाञ्छनस्यच्छलेन ॥4 2 2 ॥

अनुवाद (वृत्ति) - आरोप विषय (उपमान) के समान आरोप्यमाण (उपमान) जब शब्दत:, उपात्त (कथित) होते हैं, तब समस्त वस्तुएँ जिसका विषय है ऐसा 'समस्तानि' वस्तूनि विषयोऽस्य इस व्युत्पत्ति के अनुसार) समस्तवस्तुविषयक साङ्गरूपक होता। 'आरोपिता:' में बहुवचन अविवक्षित है। जैसे –

"चांदनी रूप भस्म लगाने से सफेद (शुभ्र), तारका (तारे) रूपी अस्थियों को धारण किये हुए और अन्तर्धान (छिपने) की कला में निपुण (रसिक) यह रात्रि रूपी कापालिकी चन्द्ररूपी मुद्राकपाल में कलङ्क (लाञ्छन) के व्याज से सिद्धाञ्जन का चूर्ण रखे हुए एक द्वीप से दूसरे द्वीप घूम रही है ।1422।।

अनुवाद - उपमान के द्वारा उपमेय का निगरण करके काल्पनिक और अभेद का निश्चय (अध्यवसान) करना, प्रस्तुत का अन्य रूप में वर्णन करना, यदि के समानार्थक शब्दों के द्वारा कल्पना अर्थात् असंभव अर्थ की कल्पना करना और कार्य तथा कारण के पूर्वापर भाव का विपर्यय इस प्रकार अतिशयोक्ति अलंकार जानना चाहिए।

अनुवाद (वृत्ति) - उपमान के द्वारा अपने भीतर निगरण कर लिये गये उपमेय का जो अध्यवसान (तादात्म्य निश्चय) होता है, उसे प्रथम प्रकार की अतिशयोक्ति कहते हैं।

(7) अर्थान्तरन्यास अलंकार

(सू0 165) सामान्यं वा विशेषो वा तदन्येन समर्थ्यते।

यत्तु सोऽर्थान्तरन्यासः साधर्म्येण परेण वा ॥109॥

साधर्म्येण वैधर्म्येण वा सामान्यं विशेषेण यत् समर्थ्यते,

विशेषो वा सामान्येन सोऽर्थान्तरन्यासः।

अनुवाद - जहाँ पर सामान्य का विशेष के द्वारा अथवा विशेष का सामान्य के द्वारा समर्थन होता है, वह अर्थान्तरन्यास अलंकार साधर्म्य अथवा वैधर्म्य से दो प्रकार का होता है ।।109 ।।

(1) निजदोषावृतमनसामतिसुन्दरमेव भाति विपरीतम् ।
पश्यति पित्तोपहतः शशिशुभ्रं शङ्खमपि पीतम् ।।479।।

अनुवाद - अपने ही दोष से जिनका मन व्याप्त (आवृत) है उनको अति सुन्दर वस्तु भी विपरीत (बुरी) लगा करती है। पित्त (पीलिया) रोग से पीड़ित लोगों को चन्द्रमा के समान शुभ्र (सफेद) शङ्ख भी पीला दिखाई देता है ॥479॥

विमर्श - यहाँ पर पूर्वार्द्ध में कथित 'अपने ही दोष से व्याप्त मन वाले व्यक्ति को सुन्दर वस्तु भी बुरी लगती है' इस सामान्य का समर्थन उत्तरार्द्ध में कथित 'पीलिया रोग से पीड़ित व्यक्ति को सफेद शंख भी पीला दिखाई देता है' इस विशेष कथन से किया गया है, अतः यह साधर्म्य के द्वारा विशेष से सामान्य के समर्थन का उदाहरण है।

(2) सुसितवसनालङ्कारायां कदाचन कौमुदी –
महसि सुदृशि स्वैरं यान्त्यां गतोऽस्तमभूद्विधुः
तदनु भवतः कीर्तिः केनाप्यगीयत येन सा
प्रियगृहमगान्मुक्ताशङ्का क्व नासि शुभप्रदः ॥480॥

अनुवाद - सुन्दर श्वेत वस्त्रों और अलंकारों को धारण किये हुए सुनयना नायिका कभी (किसी दिन) चन्द्रमा की चाँदनी में अभिसार के लिए जा रही थी कि मार्ग में चन्द्रमा अस्त हो गया। उसके बाद आपकी कीर्ति का किसी ने गायन किया, जिससे वह (नायिका) निःशङ्क होकर प्रियतम के घर चली गई, आप कहाँ लोगों के लिए कल्याणकारी नहीं हैं ॥480॥

विमर्श - यहाँ पर 'आप कहाँ पर कल्याणकारी नहीं है' इस सामान्य कथन के द्वारा 'सुसितवसनालङ्कारायाम्' इत्यादि में उपकार विशेष का समर्थन किया गया है; अत: यह साधर्म्य के द्वारा सामान्य से विशेष के समर्थन का उदाहरण है।

तुलना

अलङ्कार (काव्य - काव्यशास्त्र)

↓

साहित्यदर्पण (विश्वनाथ)

काव्यप्रकाश (मम्मट)

अनुप्रास उपमा रूपक उत्प्रेक्षा

यमक श्लेष अर्थान्तरन्यास